Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2020, VOL- 7/58

ब्रोक्पा जनजाति : सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य
(लद्दाख क्षेत्र के सन्दर्भ में)

कविता कन्नौजिया, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, किशोरी रमण स्नातकोत्तर, महिला महाविद्यालय मथुरा।

Abstract

प्रस्तुत लेख 'ब्रोक्पा जनजाति : सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य' (लद्दाख क्षेत्र के सन्दर्भ में)के अर्न्तगत ब्रोक्पा जनजाति के ऐतिहासिक, सामाजिक, सास्कृतिक पहलूओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन लोक परम्परा, धर्म, वेश-भूषा ,खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक पहलूओं पर केन्द्रित है। इसमें प्रयुक्त तथ्यों, आकड़ों एवं चित्रों का संग्रह द्वितीयक स्रोतों एवं जनजाति क्षेत्र के अध्ययन कर्ताओं के साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है। लगभग 5000वर्षों से लद्दाख के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाली ब्रोक्पा जनजाति इस क्षेत्र का प्रथम निवासी होने का दावा करती है और स्वयं को सिकन्दर की सेना का वंशज मानती है। इस जनजाति के लोग हिन्दू धर्म के अलावा का 'शिया इस्लाम और 'बौद्ध सम्प्रदाय महायान' का अनुसरण करती है। कृषि, पशुपालन, उत्सवों, त्योहारों, रीति-रिवाजों तथा अलंकृत परिधानों का प्रदर्शन इनके धार्मिक अनुष्ठानों, लोकगीतों एवं परम्पराओं आदि में मिलता है । विभिन्न विपरीत परिस्थितियों के बीच लद्दाख क्षेत्र संस्कृतियों, धर्मो, परम्पराओ, मठों, स्तूपों, राजवंशों एवं प्राकृतिक, सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। लद्दाख अपने आप में अनेक विविधताओं एवं रहस्यों को संजोए हुए है जो पर्यटकों, पत्रकारों एवं समाज वैज्ञानिकों के लिए अनेक प्रश्नों एवं उत्सुकता को प्रेरित करती है। ब्रोक्पा जनजाति समाज ने अपने सांस्कृतिक क्रिया-कलापों, परम्पराओं, प्रतिमानों, सामाजिक सम्बन्धों, नियमों एवं निषेधों आदि के समन्वय से अपनी अलग पहचान स्थापित की है ।

Key words *- जनजाति , लद्दाख, संस्कृति , ब्रोक्पा*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भारत का लद्दाख क्षेत्र मानव सभ्यता के आरम्भिक काल से ही विभिन्न संस्कृतियों का पोषक रहा है। लद्दाख पूर्व में चीनी तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र, दक्षिण में भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश, और पश्चिम में जम्मू व कश्मीर तथा पाकिस्तान प्रशासित गिलगिट बाल्टिस्तान से एवं शिनजियांग के दक्षिण-पश्चिम कोने से दूर उत्तर में काराकोरम दर्रा से घिरा है। सिन्धू नदी इस क्षेत्र में प्रवाहित होती है। लद्दाख वेहद ठंडा प्रदेश है। इसलिए इसे 'ठंडे रेगिस्तान' के नाम से भी जाना जाता है। लद्दाख सिन्धु जल सीमा के उपरी हिस्से के भीतर स्थित है, जो भारत में लगभग 120 मिलियन लोगों (हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू- ओर कश्मीर ओर पंजाब तथा राजस्थान) और पाकिस्तान प्रान्त के पंजाब प्रांत के लगभग 93 मिलियन लोगों को जल संसाधन प्रदान करता है। लद्दाख के भीतर जल संसाधनों का सावधानी पूर्वक प्रबंधन ही नही बल्कि लद्दाख की आजीविका परिस्थिति तंत्र व नदी तंत्र के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। लामा भूमि या छोटे तिब्बत के रूप में लोकप्रिय लद्दाख लगभग 9.000फीट से 25170 फीट ऊँचाई पर स्थित है। लद्दाख में टैकिंग ओर पर्वतारोहण से लेकर विभिन्न मठों और बौद्ध पर्यटनों जैसे मनोरंजन के स्थान है। लद्दाख दुर्गम वातावरणीय परिवेश में होने के बावजूद भी यह जनजीवन के संरक्षण, व्यापार मार्ग, पाषाण कालीन संस्कृति, पुरातात्विक साक्ष्यों एवं

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामरिक दृष्टिकोण से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अलग-अलग काल खण्डों में लद्दाख भिन्न-भिन्न साम्राज्यों का हिस्सा रहा है।'हेराडोट्स, मार्चस मैगस्थनीज, प्लिनी, टालमी' जैसे विद्वानों द्वारा एवं नेपाली पुराणों में इस क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति एवं प्राचीन निवासियों का विस्तृत वर्णन मिलता है।(पेटेक 1977) सातवी शताब्दी में 'जुआन जैंग' ने अपनी यात्रा वृतान्त में लद्दाख का जिक्र किया है। आठवी शताब्दी में यह पूरब में तिब्बती प्रभाव और मध्य एशिया से चीनी प्रभाव के टकराव का केन्द्र बन गया। सन् 842 ई. में तिब्बती शाही प्रतिनिधि 'न्यिमागोन' ने तिब्बत साम्राज्य के विघटन के पश्चात लद्दाख पर आधिपत्य स्थापित कर 'लद्दाखी राज्यवंश ' की स्थापना की । (स्टेन 1972) 'राजा ल्हाचेन भगान' लद्दाख को संगठित कर ' नामग्याल वंश' की नींव रखी। सन् 1838 ई. में ' राजा गुलाब सिंह ' के जनरल ' जोरावर सिंह कहलूरिया' लद्दाख पर आक्रमण कर जीत लिया। ओर जम्मू के डोगरा राज्य में मिला लिया। सन् 1947 ई. में स्वतंत्र भारत के विभाजन के समय 'डोगरा राजा हरिसिंह' ने जम्मू कश्मीर राज्य का भारत में विलय स्वीकार कर लिया। इस प्रकार लद्दाख की सीमाए भारत के अर्न्तगत निहीत हो गयी। सन् १९९० के दशक में लद्दाख के लिए 'आटोनामस हिल डेवलपमेंन्ट काउंसिल' का गठन किया गया। पाकिस्तान और चीन के साथ रणनीति और सीमा विवादों ने पिछले ५०वर्षों से इस क्षेत्र में सेना की उपस्थिति के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया है। लद्दाख में मिले शिला लेखों से पता चलता है कि यह स्थान नवपाषाण काल से स्थापित है (लोरम २००४) यहा की अधिकांश भूमि कृषि योग्य है। पहाड़ के पीछे बसे होने के कारण यहाँ मानसून नही पहुँच पाता है। जिसके कारण औसतन वर्षा भी कम होती है। (हुसैन 2010) लद्दाख की कुल क्षेत्रफल लगभग 59,196 वर्ग किलोमीटर (22,856 वर्ग मील) है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार लद्दाख की कुल आबादी 2,74000 है। लद्दाख विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों , परम्पराओं, स्थापत्य कलाओं, मठों,स्तुपों,राजवंशों एवं प्राकृतिक सौन्दर्यता का आश्रय रहा है।

लद्दाख की ब्रोक्या जनजाति एल.ओ.सी. के समीप सिन्धू नदी के तट पर स्थित 'धा, बेमा, हानु, दार्चिक, गारकोन, आदि गाँवों में निवास करती है। इस क्षेत्र को 'आर्यन घाटी' के नाम से जानते है। जहां लगभग ५००० हजार की संख्या में बोक्पा जनजाति निवास करती है। (बांगरू 2019, वांगचुक 2019) ब्रोक्पा के लोग ऊँची कद-काठी, मजबूत शारीरिक गठन, बादामी रंग, नीली- हरी आँखे, लम्बी नाक, सुनहरे काले व भूरे बाल, राजसी दिखने वाली परिधान संस्कृति का प्रदर्शन करते है। (नामम्याल 2015, भान 2016)अपनी रक्त शुद्धता, जातीय शुद्धता एवं संस्कृति की मूल अवस्थाओं को शताब्दियों से जीवंत रखने वाली यह जनजाति स्वयं को 'मिनारो' (आर्यन) नाम से सम्बोंधित करती है एवं अन्तिम बचें शुद्ध आर्यन होने की दावा करती है। (सेन गुप्ता 2015)इस जनजाति के लोगों के नयन-नक्शे 'हिन्दू आर्यन सभ्यता' से बहुत ही मेल खाते है। ब्रोक्पा समूह लद्दाखी के अलावा बढ़ते संचार व शिक्षा के प्रभाव के कारण हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू का भी ज्ञान रखते है। लेखन कला, साहित्य तथा दस्तावेजीकरण के अभाव में भी यह जनजाति अपने इतिहास को अपनी आदतों, परम्पराओं एवं लोकगीतों में सजाये रखा है। इस जनजाति समाज ने अपने सांस्कृतिक क्रियाकलापों, परम्पराओं, प्रतिमानों , सामाजिक संम्बन्धों, नियमों एवं निषेधों आदि के समन्वय से अपनी एक अलग पहचान स्थापित की हैं। प्रजाति एवं जीन श्रृंखला की शुद्धता तथा पारिवारिक सम्बन्धों के निर्माण की प्राथमिक इकाई विवाह की उपादेयता को बनाये रखने के लिए बेहद कड़े सामाजिक नियमों एवं निषेधों का अनुसरण किया है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्तमान में भी इस विशिष्ठता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील है। ब्रोक्पा जनजाति पर व्यापक अध्ययन करने वाले विद्वान वीरेन्द्र बंगारू ने कहां की यह जनजाति आधुनिकता और पारम्परिकता के बीच एक सन्तुलन बनाएं रखने के लिए संघर्ष कर रही है।

ब्रोक्पा जनजाति के लोग संग्रोत्र विवाह प्रणाली का पालन करते है। (भसीन 1992,नेल्सन 2012, भान 2016) ये अपने स्वयं के गाँव परिवार के मध्य ही वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित करते है। इस नियम को तोड़ने वाले को अपने गाँव एवं समाज से निष्कासित कर दिया जाता है। हालांकि ये परिवारों के मध्य विवाह सम्बन्धों में ये दोनों पक्षों की तरफ से तीन या उससे भी अधिक पीढ़ियों का अन्तर रखते है। अद्भूत प्राकृतिक सौन्दर्य एवं पर्वतों से धिरा हुआ लद्दाख अपने सौदर्य की छटा विखेरतें, कच्चे मकान, एक्का-दुक्का चरते जानवर खुबानी से लदे पेड़, क्षेत्र के बीच से बहती छोटी सी नदी पर कपड़े धोतीं पारम्परिक वेश-भूषा में लद्दाखी बालिकाएं इस वीरानें में जीवन का स्पंन्दन शायद ही कही और देखने को मिलेगा। प्रकृतिक फूलों, लोकगीतों तथा उत्सवों के इर्द-गिर्द घूमने वाले ब्रोक्पा लोगों के जीवन में विवाह परम्परा एवं समारोह की भाँति है। इस जनजाति में माता-पिता बेटें के जन्म से ही उसके विवाह सम्बन्ध में विचार करने लगते है जब वे किसी लड़की को अपने बेटे के योग्य समझने लगते है तो पिता बेटे के मामा व रिश्तेदारों के साथ लड़की पक्ष के घर की आवश्यकता की नौ वस्तुओं को लेकर रिश्ते के लिए जाते है। यदि लड़की के माता पिता लड़के के पक्ष से सहमत होते है तों औपचारिक समझौते के तहत समान को रख लेता है। दोनों पक्षों द्वारा समझौते के शर्तों को कड़ाई से पालन किया जाता है। यदि कोई पक्ष समझौते से मुकरता है तो उसके लिए 'स्थानीय प्रथागत कानून' के अनुसार सजा का भी प्रावधान होता है । जब बच्चें विवाह योग्य हो जाते है तो विवाह समारोह का आयोजन कर विवाह सम्पन्न करा दिया जाता है । (नामम्याल 2015) ब्रोक्पा जनजाति में 'बहुविवाही प्रथा का भी प्रचलन है इनमें स्त्री पुरूष को एक समान अधिकार प्राप्त होने के कारण दोनों एक से अधिक बार विवाह विच्छेद या विवाह सम्पन्न कर सकते है। शिक्षा, संचार, प्रसार एवं वाह्य संपर्कों आने से इनमें धीरे-धीरे बहु विवाही प्रथा समाप्त हो रही है संयुक्त परिवार में जीवन यापन करने वाली यह जनजाति अब एकांकी परिवार एवं नीजि संम्पति की व्यवस्था का पालन करने लगी है।

ब्रोक्पा का रसोईघर 'देवालय' के तुल्य है इनमें निर्मित खम्बें 'भगवानल्हा' तथा चूल्हें से सम्बन्धित 'सबदग' अर्थात भूपति का प्रतिक माना जाता है। इस रसोई घर में निर्मित भोजन पहले अपने इष्ट देवों को अर्पित करते है इसके पश्चात भोजन ग्रहण करते है । महिलाओं के प्रसव एवं अस्वस्थता की स्थिति में रसोई में प्रवेश वर्जित है। इस जनजाति का आहार स्थानीय रूप से उगाए गये खाद्य पदार्थों जैसे गेहूँ, जौ, हार्डी पर आधारित होता है । जिसे अक्सर

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सत्तू (त्संम्पा)के रूप में तैयार किया जाता है । मूल रूप से शाकाहारी इस जनजाति के लोग धार्मिक वर्जना के कारण डेयरी और पोल्ट्री स्रोत नही खाते है। केवल भेड़ एवं बकरी से प्राप्त होने वाले डेयरी उत्पादों जैसे दूध, दही, घी, मक्खन, आदि का प्रयोग करते है। गाय, भैस, मुर्गी, अथवा अन्य जानवरों से प्राप्त होने वाले किसी भी प्रकार के उत्पादों का उपयोग वर्जित है इनका मानना है कि इन जानवरों के दूध, दही, घी, मक्खन, अंडे, मांस, गोबर या ईंधन इत्यादि के प्रयोग से देवता रूष्ठ हो जाते है। शाकाहार का अनुसरण करने वाली जनजाति त्योहारों या उत्सवों में मटन (बलि के बाद मांस) प्रसाद रूप में बनाकर खाते है। ये लोग 'स्वास्तिक' का प्रयोग अपने अनुष्ठानों में करते है । पुरातात्विक साक्ष्य से पता चलता है कि शव को पहाड़ो में दफन करते है (मुखर्जी -ब्रोक्पा द आउट साइडर डाक्यूमेंट्री) अब ये बौद्ध धर्म के अनुरूप शव का 'अग्नि संस्कार' करते है। प्रत्येक गांव का अपना छोटा सा मठ भी होता है। ब्रोक्पा लोग मठों से भिक्षु बनने तथा बौद्ध दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा का अध्ययन करने अन्य राज्यों के मठों में जातें है। कुछ ब्रोक्पा इस्लाम धर्म कबूल कर लिया है । (नामम्याल 2015) बौद्ध गाँवों में निवास करने वाले ब्रोक्पा समुदाय वर्तमान में बौद्ध धर्म के साथ-साथ अपनी पुरातन धार्मिक भाषायी मूल्यों का पालन करते हैं । बौद्ध धर्म के अनुयायी ब्रोक्स्टाल व शिया इस्लाम धर्म कबूल करने वाले मीनारों भाषा का प्रयोग करते है।

'यतो अथवा यता' ब्रोक्पा जनजतियों द्वारा मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण समारोह है। यह इस जनजाति के सामाजिक प्रतिष्ठा एवं समृद्धि से सम्बन्धित है यह समारोह उस व्यक्ति द्वारा आयोजित किया जाता है जो आर्थिक रूप से इतना समृद्ध हो जाता है कि अपने गांव की सभी लोगों के लिए पर्याप्त राजसी भोजन करा सकता है ।

'ना'एवं 'बोनोना' पर्व वर्ष के प्रथम फसल की कटाई से पहले आयोजित किया जाता है । इस अवसर पर ये लोग अपने खेतों से फसल से बाली लाकर पूजा घरों, रसोई घरों में स्थित कुल देवता, मठों में तथा देवालयों में चढ़ातें । अच्छी फसल के लिए अपने देवता के समक्ष आभार प्रकट करते है । बोनोना का अर्थ होता है। 'बड़ा उत्सव' यह पर्व पाँच दिनों ते चलने वाला उत्सव है । यह अक्टूबर माह में मनाया जाता है ।

'नोसर/लोसर' पर्व इस पर्व को बौद्ध धर्म अपना लेने वाले ब्रोक्पा जनजाति के लोग नव वर्ष के आगमन के रूप में मानते है। इस पर्व पर सभी अपने प्रियजनों को उपहार देते है। बुरी आत्माओं और नकारात्मक शक्तियों से बचने के लिए शाम को एक मेथों (जूलूस) निकालते है। जूलूस में प्रयोग किये गये। मशाहों को बाहर ही फेक दिया जाता है। यह त्योहार नव वर्ष का स्वागत व बुरायों को दूर करने का पर्व माना जाता है। लोग धर्म के रक्षक के रूप में माने जाने वाले देवी पाल्डेन ल्हामों को धार्मिक प्रसाद चढ़ाते है। घर को रोशनी से सजाते है।

ब्रोक्पा जनजाति घुमंतु होने के वावजूद देवी देवता में विश्वास करते है। इनमें बकरियों को गाय से ज्यादा ऊँचा दर्जा मिला है । इनके लोकगीतों में उनकी पूर्वजों का जिक्र मिलता है। इनके पूर्वज करे सातवी सदी में गिलगीत बलतिस्तान से आकर बटालिक के आस पास के इलाके में बसे ब्रोक्पाओं की मौजूदा पीढ़ी पढ़ाई की ओर ध्यान दे रहे है लड़कियों को पढ़ने व कैरियर बनाने के लिए बराबरी का मौका दिया जाता है इनके जीविकोपार्जन का सबसे बड़ा जरिया खूबानी की बागवानी या बार्डर रोड आर्गनाइजेशन से मिलने वाली मजदूरी है अभी भी इनके क्षेत्रों में पानी व बिजली की किल्लत है। ब्रोक्पा अर्थव्यवस्था कृषि पशुचारण से मजदूरी श्रम में स्थानांतरित हो रही है श्रम का विभाजन

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आयु व लिंग के स्तरी करण पर निर्भर है । निजि संम्पति एक विवाह, एकल परिवार औपचपारिक शिक्षा मजदूरी श्रम और सैनिकों और पोंटिग की अत्यधिक सैनिकृत अर्थ व्यवस्था में शामिल होने के लिए ब्रोक्पा लद्दाख में आधुनिकता के जटिल क्रिया कलापो को उजागर करता है ।

ब्रोक्पा लोगों के जीवन में श्रृंगार एवं धातुओं से बने आभूषणों का विशेष महत्व है। कानों में कीमती पत्थरों से बन कर्णफूल तथा सिर पर प्राकृतिक फूलों, धतु के सिक्कों व आभूषणों से अलंकृत टोपी पहनते है। जिसे तेपी के नाम से जाना जाता है। इनके यहां आभूषणों का वैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय महत्व है इनका मानना है कि धातु से निर्मित वस्तुए बुरी नजर एवं आत्माओं से , चाँदी के आभूषण ग्रहों के प्रभाव से सात विभिन्न रंगो के रीबन सूर्य एवं ग्रहण से होने वाली बीमारियों तथा मोर का पंख लकवा रोग से इनकी सुरक्षा करता है। फूलों को ये पवित्र एवं शुभ मानते है। इनके यहां बेरी का फूल 'प्रेम एवं समृद्धि' का प्रतीक माना जाता है। प्राकृतिक पवित्रता के प्रति विशेष समपर्ण होने के कारण ये पहाड़, वृक्ष, पुष्प एवं वृक्षों को शुद्ध मानते है। यही कारण है कि ब्रोक्पा जनजाति घरों में फूलों का बगीचा बनाते है। इस समाज की महिलाएं ज्यादा परिश्रमी एवं कृषि कौशल में निपुण होती है । इनके द्वारा पाले जाने वाले पशु और इनके डेयरी उत्पादों के साथ-साथ वस्त्र प्रबन्धन की भी आवश्यकताओं को पूरा करते है। महिलाएं उन तथा भेड़ व बकरी के खाल से निर्मित विशेष प्रकार के वस्त्र का प्रयोग करती है। ऊन एवं चर्म से वस्त्रों का निर्माण कर यहां के परिवेश में खुद की सुरक्षा सुनिश्ति करते है। ब्रोक्पा समाज अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर रहने वाली जनजाति कृषि उत्पादन करने लगी है। अब यहां 'सहकारी कृषि प्रणाली (कॉपरेटिव फार्मिग सिस्टम)पायी जाती है। इस क्षेत्र में पाये जाने वाले 'याक' एवं 'गदहे' का पालन कृषि कार्य एवं वस्तुओं के आयात निर्यात के लिए करते है। पारम्परिक गीत-संगीत और लोक नृत्यः लेह तथा कारगिल प्रशासन द्वारा प्रतिवर्ष महोत्सव मनाया जाता है। इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य सदियों पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओं को पुनरजीवित करना और दुनियां भर के लोगों से इसका परिचय कराते है।

संदर्भ ग्रन्थ-

भान, मोना, 2016 'आर्यन वैली' एण्ड द पालिटिक्स ऑफ रेस एण्ड रेलिजन इन कश्मीर, ।

भसीन, वीना, 2008, सोशल चेन्ज, रेलिजन एण्ड मेडिसीन एमंग ब्रोक्पास् ऑफ लद्दाख, इस्टडीज ऑन एथनोंमेडिसीन २, नं० २: 77–102

लोरम चार्ली 2004 (2000),ट्रैकिंग इन लद्दाख, ट्रायल ब्लेजर पब्लिकेशन्स्

भसीन, वीना 1992ब्रोक्पा ऑफ लद्दाख : ए केस ऑफ एडेप्टेशन टू हैबिटेट, जनरल ऑफ ह्यूमन इकालोजी ३, नं० २ : 81–113

सेन गुप्ता, सुदित्तो 2015, अलेक्जेंडर लास्ट आर्मी : द ब्रोक्पा कम्युनिटी ऑफ लद्दाख, प्रोबासी

बांगरू,वीरेन्द्र 2019 लद्दाखस दार्द आर्यन्स स्ट्रगल टू प्रीजर्व कल्चर लिजेसी, द हिन्दू बिजनेस लाइन।

टूनडुब, छेरिड, 2019 बोनोना उत्सव तथा दरद आर्यों के प्राचीन देवी देवता । सोविनियर दार्द आर्यन्स ऑफ लद्दाख , जनवरी 18, 2019

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies